मैथिली

बाल रामायण

श्री भुवनेश्वर प्रसाद 'अध्यापक'
एम० एल० एकेडमी लहेरियासराय

प्रकाशक :—

नवरत्न गोष्ठी

(दरभंगा)

पूज्य पितृव्य स्व० रामधारीलालक पुण्य स्मृति मे

मैथिली

बाल रामायण

श्री भुवनेश्वर प्रसाद 'अध्यापक'
एम्० एल्० एकेडमी लहेरियासराय

प्रकाशक :—

नवरत्न गोष्ठी

(दरभंगा)

मूल्य ७५ न० पै०

प्रथम संस्करण
जानकी नवमी १९६३ अप्रील

मुद्रक
अली अहमद
तिरहुत प्रेस, लहेरियासराय ।

किछु हमरो सूनि लिअ ऽ

मातृभाषाक उन्नति ओ प्रचारक लेल आइ स्वतंत्र भारत मे चारू कात सँ स्वर गुञ्जायमान भै रहल अछि। ई स्वर हमरो कान मे पड़ल। हमरो मोन मे उत्साह भेल जे हमहूँ किछु मातृभाषाक सेवा कै अपन जीवन सफल करी, मुदा ई काज हमरा बुतेँ होयत कोना? हम तँ आरम्भ सँ अन्त धरि फारसी एवं उर्दू भाषा पढ़ने छलहुँ। मैथिली भाषा भाषी रहितो ओकर शास्त्रीय ज्ञान हमरा नहि छल। परञ्च मोन मे उत्साह छल, प्रेम छल ओ धीरज छल। एकटा प्रकाशकक अभाव छल जकरा लेल हम श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' क जीवन भरि आभारी रहबनि। हुनके सँ मैथिली भाषाक प्रति मात्सर्य ओ किछु ज्ञान प्राप्त कै 'बाल रामायणक' रचना कै सकलहुँ। राम-कथा भारतक जीवन मे अमरित जकाँ अनादि काल सँ मिलल छैक। आइ राष्ट्रियताक एहि जागरणक अवसर पर महापुरुष राम सँ प्रेरणा ग्रहण करब प्रत्येक भारतीयक हेतु अनिवार्य।

भारतीय साहित्य मे राम-कथा केँ उच्च स्थान प्राचीने काल सँ छैक। मैथिली मे कवीश्वर चन्दा झा ओ कविवर लाल दास राम-कथा केँ लीखि परम यशक भागी भेलाह अछि। हुनका सभक आगाँ ई कृति सूर्यक प्रकाश मे दीपोक समान नहि लगैछ। किन्तु राम-कथा तँ गंगाक पावन धाराक समान अछि, जकर एको विन्दु पाप केँ विनाश करबा मे समर्थ रहैत अछि। उपर्युक्त दुहू कविवरक रचना प्रौढ़ जनक हेतु छनि। अतः हम कोमल मति-शिशु लोकनिक हेतु सरल भाषा ओ छन्द मे 'बाल रामायणक' रचना कैलहुँ। संयोग ई जे एहि हेतु हम जे लेखनी उठौलहुँ से राम नवमी तिथि कऽ ओ समाप्त भेल, जानकी नवमी कऽ। यदि अपना देशक नेना लोकनि केँ एको रत्ती रुचिगर लगतनि, महापुरुष रामक प्रति श्रद्धा एवं मा मैथिलीक प्रति प्रेम उत्पन्न होयतनि तँ हम ओही मे तृप्त भऽ जायब।

चन्दा जयन्ती, विनीत

१९६३ ई० **रचयिता**

कर जोड़ि विनती कै रहल छी शारदा ओ शेष सँ ।
जे करथु ईरचना सफल अछि प्रार्थना विघ्नेश सं ।।
वन्दिअ सकल प्राणि संसार ।
जकरा घट-घट करुणाधार ।।
जखन पड़ै महि पर अघ भार ।
तखने लइ छथि हरि अवतार ।।
त्रेता युग केर ई थिक बात ।
कैल जखन निशिचर उतपात ।।
भारत दच्छिण लंका देश ।
योद्धा रावण जतक नरेश ।।
बीस भुजा दस माथ छलैक ।
गिरि समान तन बूझि पड़ैक ।।
दसमुख नित कैलाशहि जाय ।
शिव कँ पूजै मनचित लाय ।।
शम्भु चरण पर शीश चढ़ाय ।
शिवक कृपा सँ नव नव पाय ।।
बड़ बड़ छल पौने वरदान ।
बूझै नहि अछि क्यो बलवान ।।
बली महान भयंकर वेश ।
सुरपुर तक जीतल लंकेश ।।

होम यज्ञ पर पड़ल कपाट ।
सुर मुनि धैलनि विपिनक बाट॥
सुर मुनि सबकेँ देखि अनाथ ;
रामरूप धै कैल सनाथ ॥
सुनु अवतारक कथा अनूप ।
दशरथ छला अवध केर भूप ॥
सरयू तीर छलनि रजधानि ।
शोभा क्यो नहिं सकै बखानि ॥
स्वयं छला ओ बड़ रणधीर ।
सैन्य सुसज्जित बड़ बड़ बीर ॥
छलथिन तीन हुनक पटरानि ।
पतिव्रता तीनू गुण खानि ॥
तीनू छलथिन कोखिक हीन ।
ताहि शोक नृप रहथि मलीन ॥
गुरु अनुमति लै यज्ञ करौल ।
चारि पुत्र नृप लगले पौल ॥
कौशल्या सँ भेलथिन राम ।
केकयि पुत्र भरत गुण धाम ॥

लक्ष्मण रिपुसूदन दुहु भाय ।
छलथिन तनिक सुमित्रा माय ॥
चारू भाय महा बल श्रेष्ठ ।
छलथिनि राम ताहि मे ज्येष्ठ ॥
सुन्नर चारू एक पर एक ।
लीला अद्भुत करथि अनेक ॥
नाना भाँतिक बाल विनोद ।
देखि भूप हुलसथि हिय मोद ॥
एहि विधि भूप करथि सुख भोग ।
चारू भेला बिबाहक योग ॥
दैवयोग दुर्घटना भेल ।
नृप आशा पर जलपड़ि गेल ॥
बक्सर मे गंगा केर तीर ।
विश्वामित्र छला मुनि धीर ॥
मखमे करै उपद्रव आय ।
राक्षस नाना रूप बनाय ॥
राक्षस नाशक कैल उपाय ।
कौशिक स्वयं अवधपुर आय ॥
कहलनि नृप सोँ सबटा क्लेश ।
राम लखन दिअ हे अवधेश !

दो०-विश्वामित्रक सुनि वचन दशरथ भेला अधीर ।
सात्रोन घनसन बहि चलल दुहुलोचन सँ नीर ॥
ब्याकुल भेला अवधनरेश ।
मन मे भेलनि अधिक कलेश ॥
कहलनि भूपति दुहुकर जोड़ि ।
आँखिक पुतली जुनि दिअ फोड़ि ॥
देखल होइ अछि आज्ञा भंग ।
कौशिक धैलनि क्रोधक रंग ॥
क्रोधक आगि लगल बहराय ।
लागल जरै सभा समुदाय ॥

दो०-गुरु वशिष्ठ पुनिआबि केँ देल तखन उपदेश ।
त्यागु मोह धैरज धरू हे ज्ञानी अवधेश ॥
गुरू वशिष्ठ कहलनि ततकाल ।
ममता त्याग करू भूपाल ॥
राम लखन नहि बालक जानि ।
मुनि केँ दिअ हैत नहिं हानि ॥
अनुमति जखन गुरू केर भेल ।
लछुमन राम संग कै देल ॥

ऐला तीनू बकसर धाम ।
निशिचर मारल ओहीठाम ॥
कौशिक पत्र जनक केर पाय ।
राम लखन सौँक हलनि आय ॥
चलु चलु देखै मिथिला देश ।
धनुष यज्ञ करता मिथिलेश ॥
जे क्यो करता शिवधनु भंग ।
सीता जैती हुनकेँ संग ॥
हर्षित भै चलला दुहु भाय ।
गौतम मुनिक कुटी लग आय ॥
देखल शिला नारि आकार ।
की थिक ! पूछल करुणाधार ॥
कौशिक कहल सुनू भगवान ।
मुनिवर गौतम परम महान ॥
घरनी तनिक अहल्या नाम ।
युवावयस मुखचन्द्र ललाम ॥
देखि हुनक ई सुन्नर वेश ।
कामातुर भेला अमरेश ॥

प्रातकाल मुनि गेला नहाय ।
ऐला इन्द्र सुअवसर पाय ॥
लेल बनाय गौतमक वेश ।
कैल अहल्या कुटी प्रवेश ॥
एतबे मे गेला मुनि आय ।
क्रोधक अनल देल बरिसाय ॥
बामा कतबो कैल विलाप ।
तैओ मुनि दै देलथिन शाप ॥
पाथर भेलि अहल्या नारि ।
सैह शिला थिक हे असुरारि ॥
शिला अहल्या तारल राम ।
चरण धूलि सँ लीलाधाम ॥

दो०–मुनिक संग अवधेश सुत, ऐला मिथिला देश ।
कैलनि उत्तम रीति सँ स्वागत जनक नरेश ॥

सीता लेल कोना अवतार ।
सुनू कथा अछि बड़ विस्तार ॥
जखन कैल निशिचर उतपात ।
धर्म कर्म सब भेल निपात ॥

मदसौँ रावण भेल बताह ।
काजो कैलक बड़ अधलाह ॥
करमे घट रावण लै लेल ।
ऋषि मुनि सौँ कर माडै गेल ॥
मुनिगण सकल कैल एक काज ।
शक्ति कैल किछु तन सँ त्याग ॥
निज तन पचि पचि सोनित देल ।
लगले कर सँ घट भरि लेल ॥
मुनि बजला ई सोनित लाल ।
कुल परिवारक हैतह काल ॥
सुनितहि रावण गेल डेराय ।
झट मिथिलाहिमे देल गड़बाय ॥
जनक हरौलनि करब विनाश ।
मन मन रावण कैलक आश ॥
मिथिला मे वर्षा नहि भेल ।
तखन जनक हर हाथहि लेल ॥
जखनहि जोतै लगला भूमि ।
तखनहि भेल प्रगट घट घूमि ॥

घट सँ ज्योति प्रकाशित भेल ।
जनकक मन विस्मित भै गेल ॥
मृदुल मनोहर सुन्नर वेश ।
कन्या देखल जनक नरेश ॥
गुंजित भेल गगन सँ वाणी जगदम्बा अवतार
लेलनि, दनुज बढ़ल धरती पर, हरती भूमिक भार
धरतीमाता नृपति जनक कँ देलथिन नव उपहार
कष्ट शोक दारुण दुख सँ जग पाबि सकत उद्धार
राखब सीता हिनकर नाम ।
सकल पदारथ छथि गुण धाम ॥
शिवपिनाक सँ छलनि सिनेह ।
नित दिन पूजा करथि विदेह ॥
सीता जकर करथि ओरिआन ।
ठाँओ बाट पूजाक विधान ॥
उठा हाथ मे धनु कँ लेल ।
ठाँओ सिया नूड़ा सँ देल ॥
देखल जनक जखन ई हाल ।

कैल प्रतिज्ञा ताही काल ॥
जे क्यो करता शिव धनु भंग ।
सिया बिआहब हुनके संग ॥
धनुष यज्ञ कैलनि मिथिलेश ।
नोत पठौलनि देश विदेश ॥

दो०- जे ई शिव धनु तोड़ता हैता सैह जमाय ।
जनकक प्रण ई छल अटल,नहि छल आन उपाय ॥

ऐला देश विदेश क भूप ।
देखि धनुष रावण भेल चूप ॥
जनक द्वार लागल अति भीड़ ।
धनु तोड़ल नहि क्यो रणधीर ॥
बजला भै मिथिलेश अधीर ।
बूझल महि पर नहि क्यो वीर ॥
आज्ञा पाबि कौशिकक राम ।
शिव पिनाक तोड़ल ओहि ठाम ॥
पुर वासी मे छल उत्साह ।
धनुषा टूटल हेत विवाह ॥
शुभ संबाद पठौल नरेश ।
हर्षित भेला सुनि अवधेश ॥

होमै लागल मंगल गान।
सोन-रूप नृप कैलनि दान॥
गज तुरंग रथ लेल सजाय।
देलनि सगरो नोत पठाय॥
अगनित ऐल छला बरियाती।
ततबै छला एतहु सरियाती॥
बर बरियातिक परिछनि भेल।
सबकेँ जनक शुभासन देल॥
चारू भाञ्जिक भेलनि विवाह।
घर-घर मंगल, भल उत्साह॥
एहि विधि किछु दिन भेल पहुनाइ।
दशरथ मङलनि तखन बिदाइ॥
जनकक मन उद्वेलित भेल।
सब ओरिआन तदपि कै देल॥
तखने आबि गेला भृगु राम।
अरुण नयन कैने ओहि ठाम॥

दो०- भेल भयंकर काल सन आबि गेला भृगु राम।
लोचन सौं उलका खसल बूझि पड़ल ओहि ठाम॥

पूछल बाजइ के बलवान ।
तोड़ल जे शिव धनुष महान ॥
लछमण उत्तर हँसि-हँसि देल ।
क्रोध-अनल मे घी पड़िगेल ॥
ऐला राम जोड़ि युग पाणि ।
प्रेम भरल बजला मृदु वाणि ॥
जुनि करु अपने हे मुनि क्रोध ।
लखनलाल छथि एखन अबोध ॥
अपराधो हमरे सँ भेल ।
छुबिते चाप खण्ड भै गेल ॥
बूझल मुनि लेल हरि अवतार ।
हरक हेतु पृथ्वी केर भार ॥

दो०—परशुराम बल रहित भै घुरि चलला निज धाम ।
कैलनि सबकें शान्त पुनि स्वस्थ चित्त श्री राम ॥

कैलनि बिदा तखन मिथिलेश ।
कौशलपुर ऐला अवधेश ॥
सकल अवधपुर मंगल भेल ।
राम सिया सबकाँ सुख देल ॥

मुख दरपन देखल अवधेश ।
देखल पाकल किछु अछि केश ।।
सोचल देब राम कैँ राज ।
हमरा नहि अछि राजक काज ।।
गुरु वशिष्ठ सँ अनुमति लेल ।
लग्न तखन शुभ ताकल गेल ।।
खबरि लोक कैँ घर-घर भेल ।
लोकक मन मोदेँ भरि गेल ।।
सुनल कैल केकयि उतपात ।
भेल अयोध्या पर आघात ।।
धैलनि कोप भवन केर बाट ।
वस्त्राभूषण त्यागल खाट ।।
मुख मलीन फूजल छल केश ।
छलनि न हिय मे करुणा लेश ।।
सुनितहि झट ऐला भूपाल ।
देखि दशा पूछल सब हाल ।।
माङ्ल नृप सौँ सपत खोआय ।
दुइ बर रखने छली जोगाय ।।
एक सौँ राज भरत करे लेल ।
दोसर सौँ रघुवर बन देल ।।

चौदह वर्षक ई बनबास।
रघुवर करता बिपिन निबास॥

दो०- सुनल वचन ई नृप जखन, भेला बहुत अधीर।
आगि पड़ल जनु माथ पर, लागल जरै शरीर॥

काटल तरु सन खसला जाय।
पीटथि माथ मनहि पछताय॥
कहथि पड़ल बड़ भारी डाक।
नोर खसाबथि भेल अवाक॥
भेल प्रात बुझलक सब लोक।
घर-घर उमड़ै लागल शोक॥
ऐला कोप भवन मे राम।
चरण छूबि कै कैल प्रणाम॥
केकयि सौं पुछलनि ततकाल।
कहू पिताक किएक ई हाल?
बुझलनि जखन भेल वनबास।
मन मे उपजल नव-नव आस॥
जैब विपिन मुनि दरशन हेत।
सकल निशाचर मारल जैत॥

बसुन्धराक हरब सब हम भार ।
जाहि हेतु लेलहुँ अवतार ॥
उठू पिता जुनि बहबी नोर ।
थीक समस्या नहि किछु घोर ॥
हँसितहि खेलितहि बन मे जैब ।
आज्ञाकारी पुत्र कहैब ॥
त्वरितहि मातु चरण लग जाय ।
आज्ञा माङ्ल शीश झुकाय ॥
दो०–सुतक भेल वनबास सुनि व्याकुल भेलिहि माय ।
पुत्र उठौलनि कोर मे रोकल बहुत बुझाय ॥
रोकलो सँ नहि रुकला जखन ।
आज्ञा देल कौशल्या तखन ॥
आज्ञा पौलनि जखने नाथ ।
ऐली सीता भेल अनाथ ॥
नहि छोड़ब अपने केर संग ।
हमहूँ छी अपने केर अंग ॥
लखनो कँ नहि रहलनि धीर ।
नोर खसाबथि भेल अधीर ॥
लखन सिया नहि छोड़ल संग ।
सब विधि भेल रंग मे भंग ॥

सगरो बहि गेल नोर क धार ।
केकयि पर फज्झतिक अछार ॥
भेला बिदा लखन रघुनाथ ।
अनुज लखन सीता लै साथ ॥
सकल अवधपुर भेल अनाथ !
कानै सब क्यो पिटि-पिटि माथ ॥
कत्तहु नहि एक फूल फुलाय ।
अवधक शोभा गेल पड़ाय ॥
सीता लखन सहित रघुवीर ।
ऐला सब क्यो गंगा तीर ॥
प्रेम भक्ति सौँ मिलल निषाद ।
जीवन भरिक मेटाय विषाद ॥
नौका लैल लखन घटबार ।
बिनु खेबेँ कै देलकनि पार ॥
खेबा कोना लैत घटबार ।
दूनू नौका खेबनिहार ॥
ओ करैत छल सुरसरि पार ।
ई करथिन भव सागर पार ॥
चित्र कूट मे ऐला राम ।
पर्ण कुटी कैलनि बिश्राम ॥

दो०-रहला बारह वर्ष धरि ओतहि सीता राम।
सेवा मे ततपर रहथि लखन लाल गुण धाम ॥

एतै सुनू अवध केर हाल।
मुइला कुहुकि कुहुकि भूपाल ॥
गुरू वशिष्ठ दौड़ौलनि दूत।
जतै छला केकयिक सपूत ॥
बिदा भेल दूत ततकाल।
आबि गेल भरत क ननिहाल ॥
देखल भरत शत्रुघ्न ओहिठाम।
गुरू आज्ञा चलु शीघ्रे गाम ॥
जखन अवध ऐला दुहु भाय।
सुनल खबरि गेला मुरछाय ॥
आबि आबि सब क्यो घेड़ि लेल।
बोल भरोस सेहो सब देल ॥
तखने ऐला गुरु महराज।
बजला करू भरत ई काज ॥
पहिने करू पिताक संस्कार।
अपने ज्ञानी अवध कुमार ॥

जाधरि नहि औता रघुराज ।
नीति धर्म सँ करु अँह राज ॥

भरत लेल नहि अवधक राज ।
स्थगित रहल अभिषेकक काज ॥

कहलनि भरत चलू समुदाय ।
बन सौँ लायब राम घुराय ॥

हमरा नहि राजक अधिकार ।
हुनकहि सौँपब राजक भार ॥

दो० चलला सकल समाजलै, भरत मनहिअकुलाय ।
सीता रामक चरण मे तन मन देल लगाय ॥

संग लेल सब अवध समाज ।
चलला जतय सिया रघुराज ॥

संग समाज भरत रणधीर ।
ऐला सब क्यो गंगा तीर ॥

राम कुशल केवट सौँ पाय ।
चलला सब क्यो मन हर्षाय ॥

चित्रकूट मे भेल मिलाप ।
शान्त भेलनि किछु हृदयक ताप ॥

कतबो कैलनि भरत उपाय ।
नहि घुरला रघुवर दुहु भाय ॥

केकयि पुत्र माथ पर लेल ।
दुहू खराम राम जे देल ॥
बिदा कैल सब काँ श्रीराम ।
सब क्यो ऐल अवधपुर गाम ॥
राखल भरत खरऔँ सिंहासन ।
नन्दि ग्राम मे मारल आसन ॥
चौदह वर्ष रहब एहि ठाम ।
जावत धरि औता नहि राम ॥
रिपुसूदन देखथु सभ काज ।
सौंपब अबितहि रघुवर राज ॥
दो० चित्र कूट शुभ धाम मे देखल लोकक भीड़ ।
पंचवटी गेला तखन लखन सिया रघुवीर ॥
घास पात केर कुटी बनाय ।
तकरा सीता स्वयं सजाय ॥
ताहि कुटी कैलनि विश्राम ।
सीता लखन सहित श्रीराम ॥
दण्डक बन मे असुरक वास ।
खल खरदूषण करै निवास ॥

रावण अनुजा फिरै उमंग ।
सूर्पनखा बहु दैत्यक संग ॥
एक दिन देखल रामक रूप ।
कामक वश भै आइलि चूप ॥
कहल राम काँ करू विवाह ।
हैत न हमर संग अधलाह ॥
सुनितहि लछमण देलनि डाँटि ।
नाक कान झट लेलनि काटि ॥
देखि अपन बहिनिक ई हाल ।
खरदूषण गरजल ततकाल ॥
चलल कटक योद्धा लै संग ।
बनि गेल अपने पावक रंग ॥
मँचि गेल तखन घोर संग्राम
निशिचर सब कें मारल राम ॥
सूर्प नखा चल गेलि पड़ैल ।
रावण लग ततकाले ऐल ॥
धिक धिक धिक तोहरा हेभाय ।
रिपु नाशक झट करह उपाय ॥
राम लखन दुहु अवध कुमार ।
श्याम गौर सुन्नर सुकुमार ॥

तनिक संग एक सुन्नरि नारि ।
जैती सती जाहिठाँ हारि ॥
से कामिनि हम तोहरे लेल ।
माङै गेलहुँ ई गति भेल ॥
खर निशिचर सब मारल गेल ।
नाक कान हमरो कटि गेल ॥
दो० रावण सुनिते बात ई पित्तेँ माहुर भेल ।
मामा मारीचक महल, लत्ते पत्ते गेल ॥
दसमुख पित्तेँ माहुर भेल ।
तखने घर मारीचक गेल ॥
कहलक सबटा कथा बुझाय ।
सिया हरक तोँ करह उपाय ॥
हरिणक रूप कनक करु गात ।
रहह राम कुटिया सौँ कात ॥
तखनहि हरब सिया सुकुमारि ।
जौँ रण करता देबनि मारि ॥
सुनु लंकेश कहल मारीच ।
नारिक हरब काज बड़ नीच ॥
हरब सिया नहि बाँचत देश ।
अपनहु मरन बुझब लंकेश ॥

अरुण नयन दुहु कैलक नीच ।
पहुँचल काल, बुझल मारीच ।।
सोनक मृग तखने बनि गेल ।
रामक आश्रम दिसि चल गेल ।।
अद्भुत हरिण देखि भगवान ।
चलला मारै, लै धनु बाण ।।
कनक हरिण झट गेल पड़ाय ।
तकरा पाछाँ रघुवर राय ।।
जखने तीर मृगा कें लागल ।
रामक स्वर सँ बाजै लागल ।।
मुइलहुँ हम दौड़ू हे भाय ।
संकट मे छी करू उपाय ।।
सीता सुनल जखन ई बैन ।
दहो बहो भेल नोरें नैन ।।
लछमण काँ झट आज्ञा देल ।
देखू जाय कतै की भेल ।।
राखू माता मन मे धीर ।
भाय हमर छथि बड़ रणधीर ।।
किछु नहि अछि ई क्लेशक बात ।
ई सब थिक असुरक उतपात ।।
अजय अमर अविनाशी राम ।
क्लेश रहित छथि ओ सुख धाम ।।

सीता गेली तखन रिसिआय ।
कटुवाणी बजली खिसिआय ॥
चलला लछुमन सुनि कटुवाणि ।
हैत दैव की, ई नहिं जानि ॥
दो०-धनु सौं रेखा खीचि कै, गेला सुमित्र कुमार ।
कहल सिया सौं जुनि करब, अपने रेखा पार ॥
गेला लखन जखन ओहि ठाम ।
जतय असुर कें मारल राम ॥
देखि सुअवसर रावण नीच ।
गेल मुदित मन आश्रम बीच ॥
छल सौं खल सीता हरि लेल ।
चटपट रथ लै लंका गेल ॥
छल दशरथक मित्र एक गृद्ध ।
नाम जटायु अवस्थें बृद्ध ॥
सुनल सिया केर जखन किलोल ।
रथ मे मारल चाङुर लोल ॥
दो०-बृद्ध गृद्ध बड़ पौरुखें, कैलनि कठिन प्रहार ।
त्यागि प्राण भय, मैथिली केर करब उद्धार ॥

दशमुख तुरत गेल खिसिआय।
पाँखि काटि दुहु देल खसाय ॥
झटपट रथ हाँकल लंकेश।
संग सिया पहुँचल निज देश ॥
निठुर अशोक वाटिका जाय।
वैदेही काँ धैल जोगाय ॥
राक्षसीक दल केँ बजबाय।
सेवा करय कहल मनलाय ॥
राम वियोगेँ सीतो खीन।
रहथि शोक-सागर मे लीन ॥
ओम्हर लखन काँ देखल राम।
बुझलनि भेला विधाता वाम ॥
पर्णकुटी ऐला दुहु भाय।
सीता केँ तकलनि अकुलाय ॥
लोटै लगला पिटि पिटि माथ।
कहथि प्रिया किय छोड़लनि साथ ॥

दो०-ताकै सीता केँ लखन, चलला लक्ष्मण राम।
देखल गृद्ध जटायु केँ, गेला ओही ठाम ॥

पुछलनि तनिक निकट प्रभु जाय।
के दुर्गति कैलक ई हाय ?
बुझलनि सबटा युद्धक हाल।
तारल खग काँ हरि ततकाल॥
ऐला रघुवर सवरिक धाम।
लखन संग कैलनि विश्राम॥
मधुर मधुर फल सवरी देल।
रामक मन गदगद भै गेल॥
पूछल सवरी सौं श्री राम।
कहू सिया भेटती कोन ठाम॥
सवरी कहल सुनू देवेश।
सीता हरण कैल लंकेश॥
जैब जखन कपिपति केर देश।
कहता सबटा पता विशेष॥
गहल प्रभुक पद बारम्बार।
भेल तखन भिलनिक उद्धार॥
राम लखन विरहें अकुलाय।
कपिक देश चलला दुहु भाय॥

देखल राम लखन कर बाण।
डर सँ उड़ल सुग्रीवक प्राण॥
बूझल बालिक गुपचर थीक।
मनुष रूप मे निशिचर थीक॥

भय सँ थर-थर काँपै लागल।
बालिक डर सँ हाँफै लागल॥

कहु हनुमत की, करू उपाय।
ककरा कहु के हैत सहाय॥

हनुमत धैलनि विप्रक रूप।
ऐला दुहु लग चूपे चूप॥

परिचय भेल परस्पर नीक;
बुझलनि राम मित्र ई थीक॥

दुहु कँ हनुमत कान्ह चढ़ाय।
आनल लग बालिक लघु भाय॥

तखनहि हरि सँ मैत्री भेल।
निज निज कथा सबहि कहि देल॥

दो०—देखि दशा सुग्रीवहुक राम गेला अकुलाय।
दै भरोस निज मित्र कँ कहलनि करब उपाय॥

कपिपति सुनितहि गदगद भेल।
आनै भूषण निज गृह गेल॥

भूषण सब आनल ततकाल।
सिया खसौलनि जाइत काल ॥
देखल सब भूषण रघुवीर।
चोन्हि हृदय मे धैलनि धीर ॥
मित्रक शोक दुराबक लेल।
धनुषवाण कर रघुवर लेल ॥
एकहि सर मारल भगवान।
छन मे हरलनि बालिक प्राण ॥
सुग्रीवहि केँ देलनि राज।
अङ्गद केँ युवराजक काज ॥
बालिक सुत अङ्गद रणधीर।
छला प्रतापी बड़ बलवीर ॥
सीता ताकक भेल उपाय।
चहु दिशि वानर गेल छिड़िआय ॥
दक्षिण दिसि गेला हनुमान।
जाम्बवान अङ्गद बलवान ॥
गिरि समान देखल एक गृद्ध।
सम्पाती छल वयसक बृद्ध ॥

कपि सम्पातिक परिचय लेल।
अपनो परिचय तनिका देल॥
काज प्रयोजन कपि कहि देल।
रामक गुण कहि मन भरि देल॥
गृद्ध तरुण तखने भै गेल।
नव नव पाँखि तनहि पर भेल॥
कहल गरुड़ सुत, हे कपिराज।
सिया हरण दसभालक काज॥

दो०–सिन्धु पार मे एक छै, लंका नामक देश।
असुरपुरी कहबैत छै, रावण जतक नरेश॥

सिन्धुपार अछि लंका देश।
खल रावण अछि जतय नरेश॥
बड़ दुर्गम अछि लंका गाम।
भेटती सीता ओही ठाम॥
बिदा भेला तखने हनुमान।
सरसर करइत वाण समान॥
हनुमानक बल बूझऽ लेल।
सुरसा केँ सुर आज्ञा देल॥

मुख बौने सुरसा गेलि आबि ।
कहल अहार गेलहुँ हम पाबि ॥
हनुमत सम्मुख सपंक माय ।
झट दै निज मुख देल बढ़ाय ॥
कपि तन मुख सँ दुइ गुण भेल ।
पुनि सुरसा दोबड़ कै लेल ॥
तकरो दुइ गुण कपि तन धैल ।
पुनि सुरसा मुख दुइ गुण कैल ॥
गेला पवनसुत अति खिसिआय ।
पेट पइसि ऐला बहराय ॥
बुझल तखन बल सपंक माय ।
देव पठौलनि कहल बुझाय ॥
सपंक माता देल अशीश ।
सुफल मनोरथ हैत कपीश ॥
सूक्ष्म रूप धै शिव अवतार ।
कैल फानि सागर कें पार ॥
जे क्यो निशिचर रोकल बाट ।
सबकाँ मारि उतारल घाट ॥

युगल चरण मारुति धै ध्यान।
लंका दिसि कैलनि प्रस्थान॥

भेटलनि एक लङ्किनि पुर द्वार।
हनुमत मुष्टिक कैल प्रहार॥

असुरक हैत बुझल संहार।
भै गेल अछि रामक अवतार॥

तखने लङ्किनि गेलि पड़ाय।
कपि चलला आगाँ हर्षाय॥

घुमि घुमि ताकथि वन उद्यान।
घर घर मारुति कैल प्रयान॥

दो०—देखल तुलसी वृन्द किछु उपजल छल एक ठाम।
जतै सुनल कपि जाय कै मधुर मधुर हरिनाम॥

रावण केर बिभीषण भाय।
रामक भजन करथि मनलाय॥

मारुति झट तनिका लग जाय।
परिचय देलनि अपन कराय॥

कहल विभीषण हे हनुमान।
जाउ अशोकक छै उद्यान॥

तरुतर देखबनि सीता दीन।
मुख मलीन छनि, तन अति खीन॥

तखने झट गेला हनुमान।
देखल दुख सीताक महान॥
निशिचरि छलि एक ओही ठाम।
हृदयक कोमल त्रिजटा नाम॥
सीता कहलनि आनह आगि।
तन जरि जाय लगाबो आगि॥
विरहक पीर सहल नहि जाय।
चिता रचाय देह सुनगाय॥
कपि चट मुनरी देल खसाय।
देने छलथिन जे रघुराय॥
राम कुशल कहि धीरज देल।
सीता काँ मन हर्षित भेल॥
कपि माङ्गल दिअ आज्ञा जैब।
भूखल छी फल वन मे खैब॥
लै आज्ञा कपि वन मे जाय।
लगला मधुर मधुर फल खाय॥
फल तोड़थि कपि विटप उपाड़ि।
देथि ताहि सौं निशिचर मारि॥

बहु राक्षस देल मारि खसाय।
कपिक डरें सब गेल पड़ाय॥

दो०—रावण सुनिते हाल ई, क्रोधें भै गेल लाल।
तखने अक्षय सौं कहल, जाउ पुत्र ततकाल॥

सङ लै निशिचर अक्षय गेल।
अस्त्र शस्त्र बहु भाँतिक लेल॥
अक्षय रण मे मारल गेल।
कपिक लोम भंगो नहि भेल॥
पुत्रक मरन सुनल दसभाल।
मेघनाद से सुनलक हाल॥
दौड़ल मेघनाद रणधीर।
लैकै सङ मे बड़ बड़ वीर॥
घोर युद्ध घननादहि कैल।
कपि बल देखि धीर नहि धैल॥
ब्रह्म पाश सँ कपि कैँ बान्हल।
मेघनाद बापक लग आनल॥
कहल कपीश सुनू लंकेश।
सीता फेरि दिअनु अवधेश॥

ई हितकर अपने कें हैत ।
निशिचर कुल तखने बचि जैत ॥

सुनितहि रावण आज्ञा देल ।
राक्षस काँ, कपि मारक लेल ॥

कहल विभीषण सुनु हे भाय ।
मारब दूत हैत अन्याय ॥

दोसर दण्ड दिअनु हे भाय ।
अपने मन मे उचित समाय ॥

रावण बाजल डाहऽ पुच्छ ।
शीघ्रहि कपि कें करह निपुच्छ ॥

तेल वसन बहु आनल गेल ।
कपि नाङड़ि मे लपटल गेल ॥

देल पुच्छ मे आगि लगाय ।
असुर चलल लै नगर घुमाय ॥

गरजन कैल तखन विकराल ।
जारै लगला नगर विशाल ॥

सगरो मचि गेल हाहाकार ।
निशिचर सब त्यागल घर द्वार ॥

क्यो नहि कपि केर सोझाँ जाय ।
मारिक डर सौँ भूत पड़ाय ॥

हर्षित भै कपि उछलै लगला ।
कुदि-कुदि घर कँ डाहै लगला ॥
लागल पवन बहै उनचास ।
आगिक ज्वाला गेल अकास ॥
खौंझि-खौंझि सब देबै गारि ।
रावण कैँ निशिचर नरनारि ॥
मचि गेल सगरो हाहाकार ।
बाँचल नहि ककरो घर द्वार ॥
नगरक शोभा की भै गेल ।
कनकपुरी छन मे जरि गेल ॥
हरिक कृपा ई बूझल गेल ।
विभीषणक कुटिया बाँच गेल ॥
कनकपुरी कपि देल जराय ।
आगि बुझौलनि सागर जाय ॥
कपि कँ किछु नहि भेलनि क्लेश ।
कृपा सिया भेल औषधि बेस ॥
दो०-नगर डाहि ऐला जखन पवनपूत हनुमान ।
सीता कपि कँ देखि कै हर्षित भेलि महान ॥

कपि सीता कैं देल भरोस।
राघव औता करु संतोष॥
सकल निशाचर करता नास।
अपने राखू मन विश्वास॥
शीघ्रहि हैत अहँक उद्धार।
आबि गेल छथि राम उदार॥
आज्ञा लै चलला हनुमान।
गरजन करइत मेघ समान॥
कपिदल सौं मिलला हर्षाय।
देलनि जननिक कुशल सुनाय॥
सब क्यो ऐला गदगद भेल।
सिया कुशल रघुवीरहि देल॥
अबइत खन चूड़ामणि लेल।
रामक चरण उपर धै देल॥
रघुवर कपि कें हृदय लगाय।
बेरिबेरि पुछथि कुशल अकुलाय॥
सीता शोक सहन नहि भेल।
दुहु लोचन झरना बनि गेल॥

अहँक ऋणी भेलहुँ हनुमान।
उऋण हैब नहि देलो प्राण॥

कहल सुकंठ सुनू रघुवीर।
अपनेसन के अछि बलवीर॥

कीट पतंग असुर समुदाय।
रण सँ सब क्यो जैत पड़ाय॥

दसकन्धर काँ हमरे भाय।
धैलनि बहुदिन काँख नुकाय॥

करब सकल निशिचर संहार।
तात करब सीता उद्धार।

दो०-कहल राम सुग्रीव सौं शीघ्रहि करू उपाय।
काज करू अपने एहन लंका जीतल जाय॥

बानर भालु बहुत मङबौल।
तखन कटक सुग्रीव सजौल॥

बड़बड़ योद्धा बड़बड़ वीर।
चलल असंख्य संग रघुवीर॥

ऐला सागर निकट कृपालु।
गरजै लागल बानर भालु॥

असुर सुनल ऐला रघुवीर।
कटक सहित छथि सिन्धुक तीर॥

काँपै लागल छोड़ल धीर।
कपि समक्ष छलनहि क्योवीर ॥
कहल विभीषण हे लंकेश।
सुनू हमर हितकर उपदेश ॥
जौं सीता राखब एहि देश।
बाँचत नहि लंका लंकेश ॥
बानर-बल अपने देखि लेल।
लंका डाहि कोना चल गेल ॥
एहन एहन बलगर बहुजीव।
बालि पुत्र अङ्गद सुग्रीव ॥
जाम्बवान सेहो बड़ वीर।
रक्षक सबहिक छथि रघुवीर ॥
सुनू भाय अपने भूपाल।
नीति धर्म केर पहिरु माल ॥
सन्धि करु रघुवीर सौंजाय।
अपने सीता दिअनु घुराय ॥'
दो०–विष समान दसभाल काँ लागल ई उपदेश।
तखने कैलक भाय पर लाल आँखि लंकेश ॥

ई उपदेश सुनल दसभाल।
गरजल कैने लोचन लाल ॥
तखन मारल कसि कै लात।
कहल सुनब नहि तोहर बात ॥
रामक शरण विभीषण लेल।
साँपक फणि सौँ मणि चलिगेल ॥
खसल चरण कहि हे रघुनाथ।
अपने बिनु हम भेलहुँ अनाथ ॥
तखने प्रभु उर लेल लगाय।
बहुबिधि धीरज देल बन्हाय ॥
भायक वध मे भेल सहाय।
फूट पड़ैं तौं घर लुटिजाय ॥
देखि उदधि जल अगम अपार।
कहल लखन सौं राम उदार ॥
उठू अनुज करु तेहन उपाय।
सुगमहि पार कटक भै जाय ॥
ऐला लछुमन सिन्धुक तीर।
माङ्गल बाट जलधि सौं वीर ॥

नहि किछु ध्यान उदधि जड़ देल ।
लखनक मन बड़ क्रोधित भेल ॥
सोखल जल लछुमन ततकाल ।
उठल उदधि मे शब्द विशाल ॥
जलचर जल बिनु गेल अकुलाय ।
प्राण बचक नहि रहल उपाय ॥
देखि दुखी जलचर समुदाय ।
सिन्धु कात ऐला रघुराय ॥
दो०-देखि दशा जन्तुक तखन बजला रघुवर धीर ।
शान्त होउ अपने लखन तजू क्रोध हे वीर ॥
कहल लखन काँ होमै शान्त ।
जलचर सब भेल विकल नितान्त ॥
राम कृपा सागर भरिगेल ।
जलचर सब काँ सुख बहुभेल ॥
कनक थार मे मणि भरि लेल ।
लै समुद्र रामक लग गेल ॥
कहल सिन्धु मे बान्हू सेतु ।
करु शिवथापन विजयक हेतु ॥
कपि कैलनि गिरि खण्डक ढेर ।
बान्हल सागर सेतु सबेर ॥

दुइ छल शिल्पी बड़ गुण शील।
बान्हल सेतु चतुर नल नील॥
हरि शिव लिंग-स्थापन कैल।
तानिक नाम रामेश्वर धैल॥

कैलनि पूजा श्री भगवान।
दुर्गा कैलथिन शक्ति प्रदान॥
बानर भालु असंख्य अपार।
गरजि कैल सागर केँ पार॥

लंका ऐला राम उदार।
सुनि मन्दोदरि देल बिचार॥
कहल हमर सुनु हे प्रियकंत।
करु नहि निशिचर कुल केर अंत॥

बड़बड़ योद्धा मारल गेल।
लंका नगर सेहो जरि गेल॥
छथि संसारक स्वामी राम।
कतऽ बैर कै करब बिराम॥

एहन उपाय करू हे नाथ।
जेहि सँ बाँचै सिन्नुर माथ॥
छाड़ि दिअऽ हठ, त्यागू बैर।
हैत कुशल गहु रामक पैर॥

दो०-रावण हँसल भभाय कै सुनि घरनिक उपदेश।
नर बानर सब करत भट असुरक पेट प्रवेश॥

जाउ बैसि घर देखू काज।
नाश करब हम कपिक समाज॥

कतबो घरनी देल उपदेश।
मानल नहि एको लंकेश॥

मनहि मनहि लगली पछताय।
मेघनाद बलवीरक माय॥

एमहर रघुनाथ केर लागल दरबार एक।
कपिदल सँ मिलि जुलि कँ कैलनि बिचार एक॥

दूत जाथु लंका लै सन्धिक प्रस्ताब संग।
मानथि तँ बेस, ने तँ देखथु रणकेर रंग॥

अङ्गद काँ प्रभु आज्ञा देल।
बालि पुत्र बड़ हर्षित भेल॥

अङ्गद ऐला लंका देश।
दसकन्धर काँ देल उपदेश॥

अङ्गद कहल सुनह दसभाल।
सिर पर नाचि रहल छहकाल॥

धरह शरण रामक ताँ जाय।
प्राण बचावक करह उपाय॥

राघवेन्द्र छथि दीनानाथ।
सकल निशाचर हैत सनाथ॥
रावण कहलक सुन बुधियार।
बालक सुत तों राजकुमार॥
तोहर शत्रु छथुन रघुराज।
बालि मारि कै लेलथुन राज॥
व्यर्थ बनै छह तों खरखाह।
हमरे सेनापति बनि जाह॥
बापक बदला लैह सधाय।
रामचन्द्र कें दैह सिखाय॥
अङ्गद कहल सुनह भूपाल।
बूझल तोहर पहुँचलह काल॥
हितक वचन लगलह अधलाह।
बुद्धि ज्ञान तजि भेलह बताह॥
करितहुँ तोरो चकनाचूर।
बुझितहुँ निशिचर गाजर मूर॥
आज्ञा देलनि नहि रघुराज।
तैं छी विवस करब नहि काज॥

रोपल पैर कहल ललकारि।
पैर हमर क्यो देत उपाड़ि॥
से विजयी हम मानब हारि।
घुमता राम सिया केँ छाड़ि॥
दो०-कहि अङ्गद दसकंठ सँ भेला तनिकऽ ठाढ़।
निशिचर मन मे देखि से उपजल शंका गाढ़॥
बड़बड़ निशिचर कैल उपाय।
नहि उपड़ल पग गेल लजाय॥
देखल सब केँ निष्फल भेल।
स्वयं दसानन ततपर भेल॥
दसो मकुट खसि पड़लै भूमि।
तकरा लागल उठबै घूमि॥
झट अङ्गद एक लेल उठाय।
रामक दल मे देल पठाय॥
दो०-अङ्गद पैर हटाय कै कहल सुनह भूपाल।
गहह चरण रघुनाथ केर भागि पड़तह काल॥
हैतह तखने तोहर उबार।
जैबह जखने शरण 'उदार'॥

सुनितहि रावण गेल लजाय।
मनहिमनहि लागल खिसिआय ॥
बल कौशल युवराज देखाय।
घुरि ऐला मन अति हर्षाय ॥
कटक लेल सुग्रीव सजाय।
घेरल लंका तखने जाय ॥
रावण सुनल गेल खिसिआय।
सेनापति काँ कहल बुझाय ॥
तोहर वानर भालु अहार।
जाय करह एखने संहार ॥
मारब अपनहि रण मे जाय।
राम, लखन काँ खेल खेलाय ॥
चलल निशाचर मन हर्षाय।
धनुष गदा तरुआरि सजाय ॥
भेल युद्ध दुहु दल मे घोर।
दुहु दिस भेल प्रहार कठोर ॥
शिलाखण्ड बहु विटप उपाड़ि।
कपि अगनित देल निशिचर मारि ॥

क्रुद्ध भेल तखने दसभाल ।
युद्धक हेतु चलल ततकाल ॥
तखनहि भेल घोर संग्राम ।
लिधुरक नदी बहल ओहि ठाम ॥
आहत भै एला कपि वीर ।
बैसल छला जतै रघुवीर ॥
दो०-विकल देखि निज सैन कें धनुषवाण लेल हाथ ।
वीर कटक लै संग मे चलला सीतानाथ ॥

देखल दशा जखन रघुनाथ ।
तखने लेल तीर धनु हाथ ॥
उठला लखन कहल कर जोड़ ।
समर दिअऽ हमरा पर छोड़ि ॥
रावण हतक करब हम काज ।
अपने आज्ञा दिअऽ रघुराज ॥
लै आज्ञा चलला ततकाल ।
निशिचर पर फेकथि शरजाल ॥
निशिचर गण बहु मारल गेल ।
दसकन्धर आहत भै गेल ॥

कपिगण सब ललकारै लाग।
शिला विटप लै मारै लाग॥
तोपल शिला खण्ड सँ लंका।
वानर भालु पिटै सब डंका॥
पुनि दसकन्धर फेकल बाण।
लेबै लागल कपि केर प्राण॥
लखनों के मूच्छिंत कै देल।
राम लखन धनु हाथहि लेल॥
अस्त्र शस्त्र बहु कैल प्रहार।
निशिचर दलक कैल संहार॥
मारल बाण लखन रघुवीर।
आहत भै गेल रावण वीर॥
वानर भालु करै जयकार।
जयहो जयहो अवध कुमार॥

दो०-देखि दशा दसमुख अपन, लंका गेल लजाय।
सेनापति सब जे छला, तनिका लेल बजाय॥

रावण रण सँ गेल लजाय।
सेनापति काँ लेल बजाय॥

कहलक तुरत जगाबह जाय।
कुम्भकर्ण सूतल छथि भाय ॥
सबटा कहि हुनि हाल बुझाय ।
समरक शीघ्रहि करथु उपाय ॥
कुम्भकर्ण सूतै छौ मास।
प्रबल वायु सन छोड़ै स्वास ॥
कज्जल गिरि तन महाविशाल ।
नाक मोछ दाँतो विकराल ॥
पहुँचल निकट तकर सब वीर।
लागल मरदै ओकर शरीर ॥
पकड़ि पकड़ि खीचै बलवान।
गरजै सब क्यो मेघ समान ॥
क्यो डंका पर दैबै चोट।
लाठी मारि मारि बड़मोट ॥
कुम्भकर्ण काँ देल जगाय।
कहल बजौलनि रावण भाय ॥
मदिरा मासुक ढेरी कैल ।
कुम्भकर्ण सब पेटेहि धैल ॥

युद्धक हेतु चलल बलवान।
गरजै लागल मेघ समान॥
बूझल सबटा समरक हाल।
सोचल पापी छथि दसभाल॥
सिया हरण किय कैलनि भाय।
के देलकनि ई बुद्धि सिखाय॥
कुम्भकर्ण बाजल अकुलाय।
सुनू सुनू हे ज्ञानी भाय॥
नारिक हरन कहाँ केर नीति।
नहि हमरा कुल केर थिक रीति॥
नर नहिं बूझब राम उदार।
पूर्ण ब्रह्म केर छथि अवतार॥
शीघ्रहि करता निशिचर नाश।
जीतक छाड़ि दिअऽ सब आस॥
छाड़ि दिअऽ अपने हठ भाय।
सीता दिअनु तुरन्त घुराय॥
देखल हठ नहि छोड़ल भाय।
समर कैल नहि आन उपाय॥

रामक दल पर कैल प्रहार।
कपिदल मारल लाख हजार॥
भैं क्रोधित ऐला रघुवीर।
निशिचर गण केर छूटल धीर॥
बल कौशल बहु देल देखाय।
मारल रिपु काँ खेल खेलाय॥
भायक मरन सुनल दस भाल।
मनमे कैलक शोक विशाल॥
लागल कानै पिटि पिटि माथ।
कहै दैव हम भेलहुँ अनाथ॥
महाबली सब राजकुमार।
देखल तातक शोक अपार॥
बोल भरोस पिता काँ देल।
वीर कटक बहु संगहि लेल॥
देखल कपि गण भेला क्रुद्ध।
शिला विटप लै कैलनि युद्ध॥
रावण सुत सब मारल गेल।
रामक दल सब हर्षित भेल॥

बहु निशिचर काँ देल सुनाय।
जे क्यो बाँचल गेल पड़ाय॥

दो०- सुनल अशुभ संवाद ई, रावण भेल अधीर।
आबि गेल ओहि ठाँ तखन, मेघनाद बलवीर॥

देखि पिता कें भेल अधीर।
मेघनाद ऐला बलवीर॥
रावण सुत छल बड़ रणधीर।
इन्द्रजीत नामक बलवीर॥
कहल पिता सौं करु विश्वास।
एखनहि शत्रुक करब विनाश॥
सैन्य सुसज्जित बड़ बड़ वीर।
लऽकऽ संग चलल रणधीर॥
नाना तरहक लै हथियार।
लड़ै चलल निशिचर परिवार॥
युद्ध कैल कपि दल सौं घोर।
विटप वाण बरिसल बहु जोर॥
बेधल सर सौं कपिक शरीर।
लिधुरे लथपथ भै गेल वीर॥

लखनलाल पर फेकल बाण।
लछमण खसला मुइल समान॥
कपि सब उठि चट गेल पड़ाय।
जतय छला बैसल रघुराय॥
सकल निशाचर हर्षित भेल।
लछुमन लग दौड़ल चल गेल॥
मेघनाद देलक आदेश।
लै जा एकरा जतय नरेश॥
लागल उठबै बड़ बड़ वीर।
पछड़ि पछड़ि कैं सब रणधीर॥
बल कौशल सब निष्फल भेल।
लज्जित भै लंका सब गेल॥
युद्ध भूमि मे हनुमत आय।
लखनलाल केँ लेल उठाय॥
रघुवर निकट जाय धै देल।
रामक मन अति पीड़ित भेल॥
सुनू ओतय लंका केर हाल।
मेघनाद दौड़ल ततकाल॥

सुनि रावण बड़ हर्षित भेल।
बहु उपहार पुत्र काँ देल॥
जय जयकार नगर भरि भेल।
निशिचर मन सँ भय हटि गेल॥

दो०-देखि दशा निज भाय केर, राम गेला अकुलाय।
सजल मेघ लोचन बनल, देलक धार बहाय॥

एतै राम दल शोकित भेल।
नोरक तँह झरना झरि गेल॥
कहल विभीषण बात बुझाय।
करता वैद्य सुखेन उपाय॥
तखनहि हनुमत लंका जाय।
लैला शीघ्रहि वैद्य बजाय॥
कहल सुखेन सुनू रघुराय।
धरु धीरज हम करब उपाय॥
हे हनुमत, धौला गिरि जाउ।
रहितहि राति जड़ी लै आउ॥
तखने बचतनि लखनक प्राण।
नहि तँ हैत अनर्थ महान॥

कहल सुखेन सुनू हनुमान।
कोना हैत बूटी केर ज्ञान॥
जाहि लता तर दीप जरैत।
देखब, चीन्हब बूझि पड़ैत॥
सुनलनि कथा जखन हनुमान।
लै आज्ञा कैलनि प्रस्थान॥
सनसन करइत गेला अकास।
रघुवर मन किछु उपजल आस॥

दो०-रावण सुनितहि हाल ई, शीघ्रहि कैल उपाय।
कालनेमि बलवीर कैं, तखनहि देल पठाय॥

बाटहि घेरह हनुमत जाय।
खेल खेलाबह पौ फटि जाय॥
कालनेमि जा बैसल बाट।
ताकै लागल कपि केर बाट॥
मायावी रावण भूपाल।
रचलक अद्भुत दोसर जाल॥
देल असंख्य दीप जरबाय।
देलक धौला गिरि चमकाय॥

बाटक कथा सुनूकी भेल ।
कालनेमि हनुमत लग गेल ॥
देबनि नहि धौला गिरि जाय ।
कालनेमि बहु कैल उपाय ॥
मारल तखने निशिचर वीर ।
शैल शिखर ऐला रणधीर ॥
सबतरि देखल दीप जरैत ।
मन किछु फुरय न किच्छु करैत ॥
शैल शिखर कर लै बलवान ।
गगन मार्ग धैलनि हनुमान ॥
बाटहि भेटलनि नन्दीग्राम ।
जपइत छला भरत हरिनाम ॥
बूझि निशाचर फेकलनि वाण ।
खसला धमदऽ तत हनुमान ॥
राम नाम कहि खसला वीर ।
सुनितहि भेला भरत अधीर ॥
हनुमत लग ऐला ततकाल ।
पूछै लगला सबटा हाल ॥

भायक दुख सुनि भेला अधीर।
कानै लगला कहिकहि वीर॥
हम छी पापी कुटिल महान।
कोना हैत हम्मर कल्याण॥
भरतक देखल शोक महान।
देल भरोस तखन हनुमान॥
जुनि राखू किछु मन मे पीर।
शीघ्रहि औता रघुवर वीर॥
देखल राति बहुत बितिगेल।
जयबा लै अनुमति झट लेल॥
दो०-भरतहि बोल भरोस दै, चलला कपि हर्षाय।
पुत्रक गति कें देखि कै, मारुत गेल लजाय॥
देखथि रजनी बीतल जाय।
राघव गेला बहुत अकुलाय॥
की कहबनि माता कें जाय।
नारिक हेतु गमौलहुँ भाय॥
बहल जाय लोचन सँ नोर।
भेटय कतहु दुखक नहि छोर॥

देखलनि छितिज लाल किछु भेल।
बुझलनि सूर्योदय भै गेल॥
हाय हाय कहि उठला धाय।
लेलनि लछुमन काँ उर लाय॥
तखनहि आबि गेला हनुमान।
औषधि नेने कपि बलवान॥
धन्य धन्य अपने हनुमान।
लखन जिआय बचौलहुँ प्राण॥
लछुमन बचता भेल विश्वास।
रघुवर मन मे उपजल आस॥
तखनहि कैल सुखेन उपाय।
बूटीं पिसिकऽ देल पिआय॥
पिबितहि उठला लखन कुमार।
होमै लागल जय जयकार॥
लखन लाल केर बाँचल प्राण।
अति हर्षित भेला भगवान॥
पुनि लछुमन भेला तैयार।
युद्धक हेतु लेलनि हथियार॥

लागल बरिसय लखनक तीर ।
धम धम खसै निशाचर वीर ।।
सबटा निशिचर गेल पड़ाय ।
लंका पति सौं कहलक जाय ।।
तखनहि कुल देवी लग जाय ।
मेघनाद देल यज्ञ रचाय ।।
कहल विभीषण हे रघुराय ।
मख विध्वंस करै क्यो जाय ।।
करत जखन ओ यज्ञ समाप्त ।
तखने करत अमरता प्राप्त ।।
सो०-विभीषणक सुनि बात, ऊठि चलल वानर निकर ।
कैलक बड़ उत्पात, यज्ञ ध्वंस करबाक हित ।।
मख कँ छोड़ि चलल घननाद ।
मन मे लै कऽ बड़ अह्लाद ।।
कटक निशाचर संगहि लेल ।
समरक हेतु बिदा भै गेल ।।
निशिचर समर कैल घमसान ।
कपि बूझल अछि काल समान ।।

फेकल लछुमन बाण कराल।
मेघनाद लोटल ततकाल॥
शर सौं मुण्ड विलग कऽ देल।
कटल भुजा लंका चल गेल॥
निशिचर गण सब गेल पड़ाय।
दसकन्धर काँ देल जनाय॥
रावण लागल करै विलाप।
कतै गेलहुँ सुत दै संताप॥
देखि भुजा पत्नी घननाद।
कैलनि मन मे बहुत विषाद॥

दो०—देखि भुजा घननाद केर, तजल सुलोचनि धीर।
लै आज्ञा निज सासु सौं, गेलि निकट रघुवीर॥

कैलक दुहु कर जोड़ि प्रणाम।
कहलनि शीश दिअऽ हे राम॥
हर्षित भै तखने रघुराय।
देलथिन आगाँ शीश बढ़ाय॥
शीश प्रेम सँ धै निज गोद।
चिता प्रवेश कैल मन मोद॥

स्वामी निकट मन्दोदरि जाय।
पति केँ कहलक कते बुझाय॥
एखनहु छाड़ि दिअऽ अभिमान।
अपने जाउ शरण भगवान॥
बड़ दयालु छथि दयानिधान।
सब विधि हैत तखन कल्याण॥
कालक बश मे छल लंकेश।
बुझल गरल सन ई उपदेश॥
लेल संग मे सैन्य अपार।
पहुँचल रण मे लै हथियार॥
सर सर सर सर फेकै वाण।
लागल लेबै सबहक प्राण॥
देखि दशा सैन्यक रघुबीर।
कर मे लेल तखन धनु तीर॥
बारि बिन्दु सम बरिसल वाण।
भेल निशाचर सब निष्प्राण॥
रघुवर मारल वाण अनन्त।
रावण मूर्च्छित भेल तुरन्त॥

दो०–जखने भेल सचेत किछु, रण सौं गेल पड़ाय।
सेनापति कें संग लै, समरक करय उपाय॥
रजनी भरि कैलक विश्राम।
प्रात होइत कैलक संग्राम॥
बहु कौशल बल देल देखाय।
भय सँ कपि गण गेल पड़ाय॥
रघुवर फेकल वाणक झुण्ड।
झट झट खसै रावणक मुण्ड॥
अचरज कैल बहुत रघुनाथ।
देखल उपजल नव नव माथ॥
तखन विभीषण कहल बुझाय।
अपने ज्ञानी छी रघुराय॥
सुधा कुण्ड छै नाभिक बीच।
कतबो मारब मरत न नीच॥
दो०–अग्नि वाण सँ राम प्रभु, सोखल तखने कुण्ड।
काटल सबटा शीश कैं, उपजल नहि नव मुण्ड॥
अग्नि वाण सँ सोखल कुण्ड।
काटल सब दसकंठक मुण्ड॥

धम दै भूमि खसल लंकेश।
लंका विजय कैल अवधेश॥
दो०–चढ़ि विमान सब देवगण, देखल ई संग्राम।
पुष्प वृष्टि घनघोर कै, गेला निज निज धाम॥
लंका जीति विभीषण देल।
अपने रघुवर किछु नहि लेल॥
सीता राम लखन हनुमान।
सब क्यो चढ़ला पुष्पक यान॥
गगन मार्ग सँ ऐला राम।
हर्षित भेल अवधपुर ग्राम॥
भरत सुनल जखने संवाद।
मनक बिलायल सकल विषाद॥
खसला दौड़ल पग पर जाय।
रामहि लेल भरत उरलाय॥
भायक मिलन परसपर भेल।
सकल अवध हर्षित भै गेल॥
लेलनि राम अवध केर राज।
अवधक भेल सनाथ समाज॥

नल नील अङ्गद हनुमान जाम्बवान संग
अपनहुँ सुग्रीव एतय अवधपुरी अयला।
लंका मे लड़ै काल थाकल छलाह जते
तते एतै बैसि भालु वानर सुस्तयला॥
देखि कै अयोध्याक हर्ष ओ उल्लास सभक, सब
जन आनन्द सिन्धु मध्य मे समयला।
ने क्यो अगुतैला ने क्यो जन घबड़ैला
ने जैबाक हेतु एको व्यक्ति सुगबुगयला॥
एक दिन सब कें लेल बजाय।
कहलनि रघुवर सुनु कपिराय॥
जुनि राखू मन मे किछु क्लेश।
जाइत जाउ अपन सब देश॥
नीति धर्म सँ करु गऽ राज।
हो आनन्दित सकल समाज॥
अपने सब छी बड़ उपकारी।
जन्म भरिक हम भेलहुँ अभारी॥
सुनितहि सब क्यो भेला अधीर।
तजब कोना हम पद रघुवीर॥

अनुनय विनय बहुत किछु कैल ।
भेल सफल नहि धीरज धैल ॥
दो०–हरि पद हिय मे राखि कै, गेला सब क्यो गाम ।
हनुमत नहि छोड़ल चरण, रहला ओही ठाम ॥
सब कैं बिदा कैल रघुराज ।
धर्मक करथि बरोबरि काज ॥
देखि प्रजागण रामक न्याय ।
रहथि सदा हर्षित समुदाय ॥
दुर्जन ककरो क्यो नहि देख ।
राग द्वेष केर रहल न रेख ॥
दुर्भिक्षक सब भय हटि गेल ।
लक्ष्मी कोष अपन दै देल ॥
पुत्रक मरन न देखथि बाप ।
नहि छल कतहु शोक संताप ॥
दुख ककरो नहि मन रहि गेल ।
अमियक स्रोत अवध बहि गेल ॥
धर्मक रक्षा सब विधि कैल ।
सत्यक मार्ग सदा प्रभु धैल ॥

दो०–गुपचर बनि कै राति कऽ, घूमथि नगर नरेश।
पता लगाबथि बात ई, की छै ककरा क्लेश॥

धोबि एक डाँटि डाँटि घरनी सँ छल कहैत।
रखबौ नहि संग आब लोकक निन्दा सहैत॥

ककरा घर जाय बास कयलें तों भरि राति।
राम जकाँ अपना कँ हम नहि करबे अजाति॥

तों बुझलें की हमरा राम।
चलतौ बल नहि किछु एहिठाम॥

रहली सीता लंका जाय।
रखलनि रघुवर प्रिया बनाय॥

सुनलनि राम जखन ई बात।
मन उद्विग्न प्रकम्पित गात॥

घर घुरि ऐला झट रघुराय।
लेलनि लखन कँ तुरत बजाय॥

तुरत लखन कँ दै आदेश।
अपन विचार कहल सविशेष॥

दो०–लै सीता कँ संग मे, जाउ लखन हे भाय।
रथ सजवा कै विपिन मे, शीघ्र दिअनु पहुँचाय॥

सुनतहि लखन गेला अकुलाय।
हाय-हाय कैलनि की भाय॥

देखल अछि नहि आन उपाय।
आज्ञा लेलनि माथ चढ़ाय॥
गर्भवती सीता कँ लेल।
विपिनहि जाय लखन छोड़ि देल॥
दो०-चौदिस पसरल खबरि ई, सीता कँ वनवास।
अद्भुत विधिक विधान लखि, नगरक लोक उदास॥
लखन घोर जंगल मे जाय।
वैदेही कँ झट पहुँचाय॥
अपने घुरि ऐला साकेत।
रघुनन्दनक बुझा संकेत॥
कलपि-कलपि कानथि कहि नाथ।
की कैलहुँ जे कैल अनाथ ?॥
मैथिलीक देखल ई हाल।
ऐला वाल्मीकि ततकाल॥
सीता सँ बुझि सबटा हाल।
कुटिया लै गेलथिन ततकाल॥
निशिदिन देथिन मुनि उपदेश।
सीता केर मेटैलनि क्लेश॥

ओतहि लेल लव-कुश अवतार।
परम प्रतापी राजकुमार॥
दुहु बालक छलथिन बलवीर।
क्यो नहि जीति सकै रणधीर॥
अश्वमेध मख कैलनि राम।
सोनक सीता लै कऽ बाम॥
यज्ञक घोड़ा छोड़ल गेल।
रिपुसूदन रक्षक पद लेल॥
लै घोड़ा चलला रणधीर।
रोकि सकै क्यो छल नहि वीर॥
घोड़ा देखि विपिन मे आय।
लव कुश लेल पकड़ि चट जाय॥
रिपुसूदन कैलनि संग्राम।
हारि गेला रण ओहीठाम॥
खबरि पौल जखने रघुराय।
अनुज लखन कौं देल पठाय॥
हुनकों बालक देलक हराय।
भरतो ऐला आज्ञा पाय॥

कैल समर तखने घमसान।
तोड़ल बालक सभक गुमान॥
मूर्च्छित खसला तीनू भाय।
लवकुश हँसला तखन अभाय॥
भूषण वसन हुनक लै लेल।
हर्षित भै सीता काँ देल॥
दो०--वस्त्राभूषण चिन्हि कै, सिया गेली मुरछाय।
तखने ऐला ओहिठाँ वाल्मीकि मुनि राय॥
तखने वाल्मीकि मुनि राय।
लवकुश काँ सब कहल बुझाय॥
मुनि निज संग लेल दुहु भाय
गेला जतय छला रघुराय॥
सबकेँ परिचय देल कराय।
रघुवर लेल पुत्र उर लाय॥
हर्षित ऐला सब क्यो गाम।
सीता रहली ओहीठाम॥
रघुवर चरण कमल उरलाय।
सीता गेली भूमि समाय॥

बहु दिन शासन कैलनि राम।
रहल कतहु नहि शोकक नाम॥
धर्मक ध्वजा गेल फहराय।
प्रेमक स्रोत हृदय लहराय॥
अवधक शोभा भेल अपार।
पृथ्वी केर हरल अघभार॥
समय पाबि गेला निज धाम।
छोड़ि अमर लीला एहिठाम॥

दो०-व्याल रूप कलिकाल मे रामनाम आधार।
राम कथा केर पाठ सौँ नर करता भवपार॥
नर करता भवपार राम-पद नेह लगौता।
जन्म मरन केर क्लेश न पुनि जीवन मे पौता॥
"भुवनेश्वरक" निवेदन राम सुनथु करुणामय।
देथु चरण मे भक्ति अचल, परिहरथु सकल भय॥

—::०::—



शुभाशंसा :—

प्रस्तुत पाथीक प्रणेता श्री भुवनेश्वर प्रसाद एहि विद्यालय मे तंतोस वर्ष सं शिक्षण कार्य करैत एलाह अछि। एहि अवधि मे यद्यपि ई मैथिली मे अनेको छिट-फुट कविताक रचना कैलन्हि अछि, जे पत्र-पत्रिका मे छपैत रहलनि, परंच ओकर पुस्तकाकार-प्रकाशन अध्यावधि नहि कैने छलाह।

प्रस्तुत पोथी मे समस्त रामायणक सारांश कें अपना मातृभाषा मैथिली मे पद्यरूप दऽ मातृभाषाक प्रति अगाध प्रेम आर श्रद्धाक परिचय देलन्हि अछि।

आशा अछि जे मैथिली भाषी पाठक गण एवं विशेष कऽ बालक वृन्द श्री भुवनेश्वर बाबूक एहि प्रयासक स्वागत करताह। वृद्धावस्था मे हिनक ई आध्यात्मिक चेतना जगैबाक प्रयास देखि अतीव प्रसन्नता भेल अछि। आशा करैत छी जे एहि तरहें मैथिलीक बाल साहित्यक अपूर्ण अंशक पूर्ति कै ई ओकरा भंडार कें भरैत रहताह।

श्री जे० कुमर

आचार्य

एम० एल० एकेडमी,

लहेरियासराय।



मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar. Acclaimed Maithili author and researcher Dr Ramdeo Jha has been kind enough to allow access to his rich personal library for digitalization.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha,

Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation.. That was a huge loss for Mithila.

But this was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195, 8877213104 vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥


॥ बिज्ञापन ॥


मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः
स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तेकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान् ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहिं सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—

(१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्यें उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय, एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो, तल्लब्ध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो। (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्यें एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय, गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय ओ मुद्रण कयल जाय। एहि परिश्रमक बदलामें दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकें उक्त श्रीमान देथिन्ह। (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपें उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि, समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि।

३ रिसर्च सोसाइटीक संरक्षक विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मित्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट,—छथि। ओ दरभङ्गाक कलेक्टर साहबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे ओ सभापति होथि। बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथ झा बी० ऐ०, बाबू श्री गङ्गानाथझा ऐम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा इत्यादि सभासदगणमें सँ छथि।

४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयबाक निमित्त फीस एक रुपैया नियत कयलगेल अछि।

५ उक्त विषय सम्बन्ध में जाहि महाशय के पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशी मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभंगा।